दीपावली महोत्सव कार्यक्रम - 2017

शान्ति मन्दिर, मगोद में श्रीगुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी महाराज के पावन सान्निध्य में दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में सभी को सप्रेम हार्दिक निमंत्रण

अक्टूबर 17, मंगलवार (धनत्रयोदशी)	वेदपारायण पूर्वार्द्ध (अध्याय 1-20) (07:00 AM - 01:00 PM) कुबेर एवं धन्वन्तरि पूजन (06:00 PM - 08:00 PM)
अक्टूबर 18, बुधवार (नरक चतुर्दशी)	वेदपारायण उत्तरार्द्ध (अध्याय 21-40) (07:00 AM - 01:00 PM)
अक्टूबर 19, गुरुवार (अमावस्या)	श्रीलक्ष्मी हवन (06:00 AM - 9:00 AM) श्रीलक्ष्मी पूजन / दीपोत्सव (05:42 PM - 8:00 PM)
अक्टूबर 20, शुक्रवार	अन्नकूट पूजन (07:00 AM - 08:00 AM)
अक्टूबर 21, शनिवार	सुन्दर काण्ड पाठ एवं भाईदूज पूजा (06:00 AM - 08:30 AM)
अक्टूबर 22, रविवार	संकीर्तन (7:00 AM – 12:00 NOON)

॥ आश्रम आगमन पर आपका उत्सुकता से हार्दिक स्वागत है ॥

शान्ति मन्दिर, मगोद महाफ़लिया, पोस्ट- अतुल,वलसाड़ (गुजरात) 396020

दूरभाष- +91(2632) 652854 / +91 (85112) 19038

॥ लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु ॥

www.shantimandir.com

वेदश्रवण का महत्त्व

"शब्दो वै ब्रह्म" इस श्रुतिवचन के अनुसार वेद मन्त्रों के माध्यम से हम जिन शब्दों का श्रवण करते हैं, वे ब्रह्मस्वरूप होने से उनका प्रभाव हमारे तन, मन, बुद्धि और इन्द्रियों पर अवश्य होता है। शब्दतत्त्व के सम्बन्ध में वर्णित है कि इस संसार में अर्थभाव से सम्पूर्ण व्यवहार शब्दों के माध्यम से हो रहा है, परन्तु वह शब्द अनादि, निधन से रहित और अक्षर (क्षरण रहित) है। वेदमन्त्र साक्षात् परमात्मा के स्वरूप हैं- "यस्य निःश्वसितं वेद यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्"। आज के आधुनिक युग में वेदमन्त्रों के श्रवण से मनुष्य के समस्त शारीरिक एवं मानसिक विकारों जैसे- रक्तचाप, तनाव, क्रोधादि का प्रशमन होता है तथा वेदोक्त शुभकर्मों में प्रवृत्ति होती है। कहा गया है- "सं श्रुतेन गमेमहि"(अथर्ववेद १-१-४)। वेदमन्त्र-श्रवण से मानसिक एकाग्रता एवं बुद्धि का विकास होता है तथा वरप्रदात्री वेदमाता हमें दीर्घायु, प्राणवान, प्रजावान, पशुमान, धनवान, तेजस्वी तथा कीर्तिशाली होने का आशीर्वाद देती हैं। वेदमन्त्र-श्रवण लाभ की पुष्टि इस प्रसिद्ध वचन से भी होती है- "स्वाध्यायोऽध्येतव्यः"(तैत्तिरीय आरणयकः २-१५)। यहाँ "स्व" शब्द से प्रेरित किया जाता है कि वेदों का नित्य अध्ययन एवं श्रवण करना चाहिए।

शान्ति मन्दिर, मगोद वेदमंत्र-श्रवण एवं वेदाध्ययन की इस सनातन परम्परा की साक्षात् दिव्य स्वात्मानुभूति के लिए नित्य सभी का हार्दिक आवाहन करता है।

॥ लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु ॥